ए.जी.डी.ए.वी. ने मनाया समन्वय संस्कृति व विचारों का अद्भुत संगत

नई दिल्ली। भारत समृद्ध संस्कृति का ऐसा देश है जहां एक से ज्यादा धार्मिक संस्कृति के लोग एक साथ रहते हैं। ये विभिन्न संस्कृति और परम्परा की भूमि है। पूरे विश्व में भारत अपनी संस्कृति व परंपरा के लिए प्रसिद्ध देश है। संस्कृति सब कुछ है जैसे दूसरों के साथ व्यवहार करने का तरीका, कला, हस्तशिल्प, धर्म, खाने की आदतें, संगीत, नृत्य आदि सब संस्कृति का हिस्सा है। भारतीय संस्कृति का अनुसरण करते हुए आज आर्य समाज द्वारा स्थापित 'दयानंद एंग्लो वैदिक' अर्थात डी.ए.वी. विद्यालय विश्व में अपना वर्चस्व सिद्ध कर चुका है। डी.ए.वी. संस्था विशेष रूप से व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास और समाज के साथ अपने एकीकरण के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करती है। कुछ ऐसा ही वातावरण ए.जी.डी.ए.वी. प्रांगण में गत दिनों बनाया गया, जिसे समन्वय संस्कृति व विचारों का अद्भुत संगत नाम से अलंकृत किया गया। वास्तव में इस कार्यक्रम का आयोजन हमारे नर्सरी विभाग के नन्हे पुष्पों अर्थात बच्चों के स्नातक होने के उपलक्ष्य में किया गया। आयोजन की शुरुआत डी.ए.वी. गान व दीप प्रज्वलन द्वारा की गई। मुख्य अतिथि डॉ. रामा, प्राचार्या, हंसराज महाविद्यालय, प्रबंधक सदस्य व विद्यालय प्रधानाचार्या श्रीमती माला सूद ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। प्राइमरी के छात्रों ने नाटक व नृत्य द्वारा समन्वय की प्रस्तुति दी। छात्रों ने विद्युतीकरण स्वागत नृत्य द्वारा हमारे सभी मुख्य अतिथियों का सहर्ष स्वागत किया। समन्वय केवल कार्यक्रम का नाम भर ही नहीं है अपितु छात्रों, शिक्षकों तथा अभिभावकों या यूं कहें कि समस्त ए.जी.डी.ए.वी. विद्यालय परिवार के सदस्यों, उनकी विविध संस्कृति, विचारों, जीवन-मूल्यों, मानव कल्याण की सोच तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना संजोए हुए समस्त आर्य समाज का समन्वय है जिसकी मजबूत नींव विद्यालय के छात्रों द्वारा रखी जाती रही है। आयोजन में मुख्य अतिथि डॉ. रामा जी प्राचार्य, हंसराज महाविद्यालय जो अपने ज्ञान, कार्यशीलता विचारों एवं कर्तव्यनिष्ठता के लिए जानी जाती हैं, अपने शब्दों द्वारा ए. जी.डी.ए.वी. का उत्साहवर्द्धन किया व बताया कि किस प्रकार डी.ए.वी. संस्था अन्य विद्यालयों से अनेक क्षेत्रों में विविधता के साथ कार्य करते हुए छात्रों को केवल शिक्षा ही नहीं देती अपितु उनके भीतर मानवता का भी विकास कर रही है।